अध्याय १

बाबाजी कौन हैं?

दुनिया भर के जिज्ञासुओं के साथ हुए मेरे संवाद और वार्तालाप से मुझे इस बात का पता चला कि उस महान सत्ता, जिन्हें बाबाजी कहते हैं, के बारे में किस कदर भ्रम की स्थिति बनी हुई है। अतः, समस्त संदेहों और उलझनों को विराम देने के लिए, मैंने अपने अनुभव और उससे प्राप्त ज्ञान के आधार पर, इस किताब में इस बात का खुलासा किया है कि सच्चे बाबाजी कौन हैं।

अपनी शैशवावस्था एवं किशोरावस्था से लेकर बाद के वर्षों तक, मैंने सदा ही उन्हें अपने मार्गदर्शक के रूप में देखा और महसूस किया है, मानो वे मुझे १९६७ में हिमालय के बद्रीनाथ में किसी महान अनुभव के लिए तैयार कर रहे थे, जब मैं महज़ २३ बरस का एक युवा था।

अपने शिष्य योगावतार लाहिड़ी महाशय के द्वारा, बाबाजी ने आधुनिक जगत को वास्तविक क्रियायोग[१] से प्रबुद्ध किया, जिन्हें स्वयं उन्होंने ही १८६१ में इस आत्मविद्या में दीक्षित किया। जब परमहंस[२] योगानंद ने १९४६ में अपनी कालजयी रचना, 'एक योगी की आत्मकथा' को प्रकाशित किया, तब पहली बार महावतार बाबाजी के विषय में बड़े पैमाने पर लोगों को पता चला।

---

१ "क्रिया का योग" एक ऐसा प्रकाशमान योग पथ जो आपको अकर्म के पथ पर ले आता है। जिसे बाबाजी गोरक्षनाथ ने कर्मों के विघटन और मनुष्य के दिव्यता की ओर उत्थान के लिए प्रदान किया है।

२ "परमहंस", किसी योगी की चौथे स्तर की दीक्षा, एक माननीय उपाधि जो रामकृष्ण और योगानंद जैसे महान सिद्धों को दी जाती है।

यही है वो परंपरा या महान वंशावली जिससे मैं सम्बन्धित हूँ और जिसके द्वारा मैं संसार को क्रियायोग के इस पवित्र विज्ञान को प्रदान करने का अधिकारी हुआ हूँ।

मनुष्य जाति के मोक्ष और उस पर अनुग्रह करने लिए सभी प्रकार के योग, यथा राजयोग, क्रियायोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग, हठयोग, लययोग, तंत्रयोग और हंसयोग एक ही स्रोत से उद्भूत हुए हैं, जो प्रकट-अप्रकट हो समस्त प्राणियों की रक्षा करते हैं और जिन्हें बाबाजी के नाम से जाना जाता है।

भविष्य में "स्वशान्ति से जगतशान्ति" की उपलब्धि, संयुक्त राष्ट्र और उसके संगठनों से बढ़कर संयुक्त मनः संगठन के द्वारा ज़्यादा आसानी से घटित हो सकेगी। और ऐसा क्रियायोग के अद्वितीय विज्ञान के अभ्यास द्वारा संभव है जो जगतशांति और आत्मज्ञान की ओर ले जाने वाला एक गैर सांप्रदायिक एवं गैर धार्मिक पथ है।

मनुष्य जाति की धारा और उसके उत्थान को सही क्रियायोग के अभ्यास की ओर प्रवाहमान बनाया जा सकता है और यह जाना जा सकता है कि शिवगोरक्ष बाबाजी और परमहंस योगानंद कृत 'एक योगी की आत्मकथा' पुस्तक वाले बाबाजी, एक ही हैं। पाठकों के द्वारा इस पुस्तक को समझ लेने से यह उद्देश्य पूरा हो सकता है। मेरा इस पुस्तक को लिखने के पीछे मुख्य विषयवस्तु और आध्यात्मिक उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

१. संसार के सामने से इस महान रहस्य से पर्दा हटाना कि शिवगोरक्ष बाबाजी, 'एक योगी की आत्मकथा' पुस्तक वाले बाबाजी ही हैं। अन्य सभी लोगों का लेखन, स्थान और बातें सहायक हैं और उनका उपयोग उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु ही किया जाना चाहिए। यह पुस्तक, योगावतार लाहिड़ी महाशय, ज्ञानावतार श्री युक्तेश्वर या परमहंस योगानंद के विषय में नहीं है। अतः जब मैं योगानंद के विषय में कोई अध्याय लिखता हूँ तब वह अध्याय महज़ एक सुविधा है जिसका सन्दर्भ यह प्रमाणित करने के लिए है कि बाबाजी और शिवगोरक्ष बाबाजी (गोरक्षनाथ या गोरखनाथ) एक ही हैं।

२. दूसरा महत्वपूर्ण कारण और अत्यावश्यक बात जिसे दिग्भ्रमित जनता को स्पष्ट करना है वो यह है कि गोरक्ष शतक और महावतार बाबाजी द्वारा लाहिड़ी महाशय को प्रदत्त क्रियायोग भी एक ही है। मेरा उद्देश्य यह साबित करना है कि बाबाजी के क्रियायोग के मूल स्रोत गोरक्ष शतक[३] और मनुस्मृति[४] हैं। यह न सिर्फ यह स्पष्ट करता है कि गोरक्ष शतक और क्रियायोग एक ही हैं बल्कि आगे चलकर इस बात की भी पुष्टि करता है कि बाबाजी और गोरक्षनाथ दोनों एक ही हस्ती के दो नाम हैं।

मध्ययुगीन काल में अनश्वर बाबाजी, अक्षय गोरक्षनाथ के रूप में प्रकट हुए। अतः दोनों एक ही हैं जिन्होंने मुझे शिवगोरक्ष बाबाजी के रूप में दर्शन दिए।

बहुतेरे लोग बाबाजी और गोरक्षनाथ के बारे में बातें करते हैं और दोनों के बीच एक महान भ्रम की स्थिति बन जाती है क्योंकि कुछ लोग उनके लौकिक आयाम के बारे में बात करते हैं, तो दूसरे दिव्य आयाम के विषय में, तो कुछ ऐसे भी हैं जो उनके ब्रह्माण्ड स्वरूपी आयाम को बतलाते हैं। कुछ लेखक उनकी चेतन अवस्था के विषय में बताते हैं, तो कुछ उनकी अतिचेतन अवस्था के विषय में, और कुछ उनकी परम चेतन अवस्था के विषय में बताने का प्रयास करते हैं। अतः जबकि यह सत्ता पृथक नहीं है, हर एक लेखक उनके विषय में अपनी सीमित समझ के द्वारा ही बता पाता है और तथ्य यह है कि कोई भी पूर्णरूपेण तौर पर उन्हें समझ नहीं सकता। अतः यह तो बस उनकी कृपा ही है कि कोई यह या कोई और पुस्तक लिख पा रहा है।

मैंने इस पुस्तक की मूल प्रति के अध्याय १९ ('हर युग के संत') के एक भाग 'बाबाजी के स्वप्न शरीर' में इस बात को यथासंभव स्पष्ट करने का प्रयास किया है। हम सभी पृथ्वी पर बाबाजी के सीमित रूप

---

३ गोरक्ष शतक, शिव गोरक्ष बाबाजी द्वारा रचित गोरक्ष पद्धति का पहला भाग है। गोरक्ष पद्धति, आत्मज्ञान के लिए प्रयुक्त की गई योग विधियों की एक प्रणाली है।

४ मनुस्मृति (जिसे मानव धर्म शास्त्र भी कहते हैं) की रचना मनु ने की थी, जिन्हें मानवजाति का पहला न्याय प्रदाता माना जाता है। इस ग्रन्थ में मानवता और उसकी उन्नति के नैतिक एवं आध्यात्मिक नियमों के संकेत दिए गए हैं।

को जानते हैं परन्तु उनकी शाश्वत सत्ता को समझ पाना असंभव है, जो सापेक्षता और सर्जन से बिलकुल परे है। यह पुस्तक मुख्य रूप से सापेक्षता और सृजनात्मकता में बाबाजी के लौकिक एवं दिव्य रूप को बतलाती है।

कुछ असत्य बातों की जांच परख

मैंने, कबीर[५], गुरु नानक[६], आलम प्रभु[७] और बालक नाथ[८] से सम्बन्धित भिन्न भिन्न सम्प्रदायों के धर्मों, पंथों और मतों की अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया। अपने सतगुरु को सर्वोत्तम और दूसरों से सबसे बेहतर साबित करने की कोशिश में, इन संतों और आध्यात्मिक सतगुरुओं के भक्तों एवं शिष्यों ने लगभग इन सभी सतगुरुओं का महानतम संत – शिवगोरक्ष बाबाजी के साथ शारीरिक या दार्शनिक संघर्ष करवाया है।

उनका ऐसा सोचना था कि जब तक उनके सतगुरु, गोरक्षनाथ को दार्शनिक वाद विवाद या सिद्धियों[९] के प्रदर्शन में परास्त न कर दें, तब तक एक महान संत और अवतार[१०] के रूप में उन्हें समाज में ऊंचा दर्जा प्राप्त नहीं हो सकता। अतः कहना चाहिए कि गोरक्षनाथ, इस परीक्षण के सर्वोत्तम लक्ष्य बन गए जिसके बिना जनसाधारण में किसी

---

५ कबीर भारत के एक मध्ययुगीन संत थे जिन्हें बाबाजी से क्रियायोग की दीक्षा मिली थी। उन्होंने अपने गुरु रामानन्द से 'राम' का मन्त्र भी प्राप्त किया था।

६ गुरु नानक एक दूसरे महान मध्ययुगीन संत एवं सिख धर्म के प्रणेता थे। उन्होंने सिख ग्रन्थ, जपजी गुटका में बाबाजी गोरक्ष नाथ के सम्मान में छन्द गाए हैं।

७ आलम प्रभु एक ऐसे संत थे जो बाबाजी गोरक्ष नाथ के १५० वर्ष पश्चात इस पृथ्वी पर आये। एक रात्रि बाबाजी ने उन्हें दर्शन दिए और अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इन गुरुओं की लौकिक भेंट का कोई ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं है।

८ मध्य युग के दौरान, बाबा बालक नाथ और नाथ परंपरा का अनुसरण करने वाले हजारों योगी, बाबाजी गोरक्ष नाथ के शिष्य थे।

९ 'पूर्णता की प्राप्ति', आध्यात्मिक पूर्णता, परम सत्य (आत्मा या ब्रह्म) के साथ पूर्ण एकत्व की प्राप्ति, असाधारण गुणोत्कर्ष, जिसके योग परंपरा में बहुतेरे प्रकार हैं।

१० 'नीचे आना', आध्यात्मिक कार्य एवं संसार की मुक्ति हेतु, दिव्यता का भौतिक प्रकाश देह में नीचे उतर आना, बाह्य रूप में कुछ विशिष्ट चिन्हों द्वारा पहचान में आता है, जैसे बहुत से मौकों पर अवतार के शरीर की कोई छाया नहीं पायी जाती।

भी संत को संत का दर्जा नहीं मिल सकता था।

इस बात ने उन कट्टर शिष्यों के मन में मनोवैज्ञानिक मतभेद पैदा कर दिया और उन्होंने गलत कहानियां गढ़नी शुरू कर दीं जिनमें गोरक्षनाथ दार्शनिक वाद विवाद या सिद्धियों के युद्ध में पराजित हुए, जबकि उनके सतगुरुओं और गोरक्षनाथ के बीच १५० से ३०० साल का अंतर था। अपने सतगुरुओं के जीवनकाल और युग के प्रति बेहद कम सम्मान रखते हुए, वे अपने सतगुरुओं को महानतम साबित करने में इस कदर डूब गए कि अपनी सारी सीमाएँ लांघते हुए उन्होंने अपने धार्मिक ग्रंथों एवं शास्त्रों में गलत जानकारियां भर दीं।

इस प्रकरण में तथ्य यह है कि मध्ययुगीन काल के ऐतिहासिक शिवगोरक्ष बाबाजी भी आलम प्रभु, बालक नाथ और गुरु नानक के काल से लगभग १५० से ३०० साल पहले के हैं। सच्चाई तो यह है कि हर युग के संत, गोरक्षनाथ ही थे जिन्होंने भगवान भर्तृहरि नाथ, कबीर, और गुरु नानक की समस्त कविताओं और रचनाओं को प्रभावित किया और उन्हें प्रेरणा प्रदान की। इन अवतारी और अत्यंत महान सतगुरुओं का अपने परमगुरु गोरक्षनाथ को परास्त करने की गलत कहानियाँ गढ़ने में कोई हाथ नहीं था। उन्हें ऐसे पराक्रम की कोई आवश्यकता भी नहीं थी।

अतः यदि कोई ऐसी पुस्तक पढ़े जो एक ईर्ष्यालु नज़रिया या किसी संप्रदाय विशेष की तरफ़ झुकाव रखती हो, तब उसे इन सभी गुरुओं के महान गुरु के विषय में फैलाई गयी झूठी बातों से गुमराह होने के प्रति सावधान होना होगा, जिनकी उपस्थिति आज भी हिमालय पर्वतों को पावन कर रही है। उन्होंने भारतवर्ष की भूमि की आध्यात्मिक धरोहर को संभाल कर रखा हुआ है। कबीर ने गोरक्षनाथ के दर्शन का पुरुषत्व गाया है और महान महिला संत मीरा ने गोरक्षनाथ के भक्तिपूर्ण हृदय को गाया है। इतना होने पर भी यह दोनों महान संत, शिवगोरक्ष बाबाजी के दर्शन और उनकी सच्ची व्याख्या कर पाने में असमर्थ रहे। परन्तु यदि गोरक्षनाथ को थोड़ा सा भी हिलना पड़े और अपना स्थान बदलना पड़े तब भारतीय दर्शन और योग का यह भवन, वैसे ही हिलने लगेगा मानो रिक्टर स्केल पर ६.६ का भूकम्प आ गया हो। अपने बचाव

में कभी कुछ भी न कहने वाले, सभी युगों में रहने वाले इस संत के आशीर्वाद ने दुनिया भर के योग, दर्शनों और धर्मों में निहित सत्य को सतत संभाल कर रखा हुआ है।

बाबाजी की खोज

आप जितना बाबाजी को जानने लगते हैं, बाबाजी आप में उतने ही अभिव्यक्त हो जाते हैं लेकिन बहुत कम लोग ही ऐसे हैं जो बाबाजी के सच्चे स्वरुप को जानते हैं। यह किसी सत्पथ पर चलने वाले साधक को हतोत्साहित करने के लिए नहीं कहा गया बल्कि यह तो किसी अहंकारी साधक के लिए है जो कल्पना कर बैठा है कि वह सर्वस्वरूपेण बाबाजी के विषय में सब कुछ जानता है और उसे बाबाजी की हर विशिष्टता का ज्ञान है। खतरा इस भ्रमपूर्ण बात को मान लेने में है कि हम बाबाजी से मिल चुके हैं और इस बात की सत्यता कोई और नहीं वरन वह व्यक्ति ही जानता है जिसने ऐसा होने का दावा किया है। उसे अपने प्रति सच्चा होना होगा कि किस हद तक उसने बाबाजी के दर्शन किये हैं या उन्हें देखा है। उसने बाबाजी को किसी चिड़िया के चहचहाने के द्वारा अनुभूत किया हो या हलकी ठंडी हवा के झोंके के रूप में, उन्हें स्वप्न में देखा हो या किसी दृष्टांत में, या फिर उनका साक्षात्कार किया हो, अर्थात उन्हें सत् के रूप में अनुभव किया, उनके चिद् स्वरुप को जाना और उन्हें आनंद रूप में महसूस किया, या उन्हें ब्रह्मनिर्वाण की सर्वोच्च अवस्था में अनुभव किया जिसे "शून्य-अशून्य का है-पन"[११] कहते हैं; हममें से कितने ऐसे हैं जिन्होंने उन्हें "अस्तित्वविहीन परमअस्तित्व"[१२] जाना और उनके साथ एक हो गए?

---

११ योगीराज सिद्धनाथ के द्वारा परिभाषित शब्दावली। शून्य प्रतीक है ब्रह्माण्ड की शून्यता का। शून्य अशून्य, ब्रह्माण्ड के सब कुछ का प्रतीक है और 'है-पन' उनमे व्याप्त है और इन दोनों अवस्थाओं से परे स्थित है।

१२ योगिराज सिद्धनाथ के द्वारा दिया गया मुहावरा, यह शब्द एक विरोधाभास का प्रतीक है क्योंकि जहाँ तक हमारे अस्तित्व का प्रश्न है, परब्रह्म, नश्वर विचार के इस कदर परे है कि वह कुछ भी नहीं है। और फिर भी वह हमारे आत्मतत्व और सकल ब्रह्माण्ड का अत्यावश्यक अंग है।

आध्यात्मिक चेतना के विविध स्तरों का अनुभव करते हुए साधक को स्वयं के प्रति सच्चा होना होगा। मैं यहाँ इस बात का फैसला करने के लिए नहीं बैठा हूँ कि क्या सही है और क्या गलत। अपनी बात कहूँ तो मैं बस इतना जानता हूँ कि मैं सेवा और मार्गदर्शन करने के लिए प्रेरित हुआ हूँ। मेरी कलम सिर्फ इसलिए लिख रही क्योंकि वे चाहते हैं कि यह लिखे। शायद इस पुस्तक का उद्देश्य हमारे अहं को काबू में रखना है और हम सभी को अपने भीतर पूरी विनम्रता के साथ यह समझने योग्य बनाना है कि हमारा स्तर कहाँ है और महान सत्ता "बाबाजी" का स्तर कहाँ है।

स्मरण रहे कि युगों युगों में जीवित रहने वाले महान संत मानवजाति के हृदय और मन को पढ़ सकते हैं। वे अच्छे तौर पर यह जानते हैं कि हर एक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत आत्मोत्थान के किस क्रम पर खड़ा है और ईश्वर के प्रति उसकी भक्ति में कितनी गहराई है।

अध्याय २

बाबाजी और गोरक्षनाथ एक ही हैं

वे अनामिक कहलाए जाते हैं परन्तु फिर भी उनके कई नाम हैं, उन सब में सबसे पहला नाम, बाबाजी है। वे समय से भी प्राचीन, सभी सिद्धों के पितामह, दिव्य राजवंशों के सम्राटों के सम्राट हैं, जिन्हे प्रथम और अंतिम कहा जाता है। वे महावतार हैं, समूचे ज्ञान और संसार के उत्थान के मूलस्रोत हैं, जिनका वर्तमान जगत से सर्वप्रथम परिचय कराया योगावतार लाहिड़ी महाशय ने, फिर ज्ञानावतार श्री युक्तेश्वर ने और तत्पश्चात परमहंस योगानंद ने, जो क्रियायोग के मुक्तिप्रदायक विज्ञान को भारत से पश्चिमी जगत में ले गए।

परमहंस योगानंद रचित, 'एक योगी की आत्मकथा'[१] के द्वारा जनसामान्य को सर्वप्रथम बाबाजी का परिचय प्राप्त हुआ। इस ग्रन्थ ने इस बात का खुलासा किया कि बाबाजी वे अमर योगी हैं जो जगत के कल्याण और आध्यात्मिक उत्थान के लिए युगों युगों से जीवित हैं। हमें बताया गया कि योगानंद के परमगुरु योगावतार लाहिड़ी महाशय ने उन्हें बाबाजी का नाम दिया और स्वयं बाबाजी के द्वारा क्रियायोग में दीक्षित हुए। योगावतार लाहिड़ी महाशय के द्वारा ही क्रियायोग के क्रांतिकारी प्रकाशमान पथ का ज्ञान आज समूचे संसार भर में प्रसारित है। हालाँकि इस विरासत के द्वारा ही हमें महावतार के कई विवरण प्राप्त हुए हैं, परन्तु फिर भी ऐसा बहुतेरी बातों को गुप्त रखते हुए किया गया। उस समय के महान आध्यात्मिक सतगुरुओं ने बेहद सावधानी

---

१ बीसवीं शताब्दी में परमहंस योगानंद द्वारा लिखित एक उत्कृष्ट आध्यात्मिक कृति।

के साथ 'बाबाजी' नाम की उस महान सत्ता के बस थोड़े से विवरणों को लोगों के सामने प्रकट किया। उस समय के लोगों की आध्यात्मिक उन्नति की अवस्था अपर्याप्त होने के कारण बाबाजी के रहस्यों को छिपा कर रखा गया। बाबाजी के जीवन और विरासत के कतिपय विवरण जनसाधारण को बताने लायक नहीं समझे गए क्योंकि उस समय लोग उन्हें अपनाने के लिए तैयार नहीं थे।

अब वह समय आ गया है कि हम इस महान सत्ता के विषय में जितना अधिक मनुष्य जान सकता है उतना अधिक सत्य प्रकट करें, जो अमर महावतार हैं, जो हमारी रक्षा और मार्गदर्शन और हमारी मानवजाति और संसार को आशीष देने के लिए आये हैं। परमहंस योगानंद ने अपनी आत्मकथा में कहा है:

"मैंने इन पृष्ठों में बाबाजी के जीवन का महज़ एक संकेत दिया है – बहुत थोड़े से तथ्य जिन्हें वे समझते हैं कि सार्वजनिक रूप से बताया जाना उचित और उपयोगी होगा।"

यह पहले से जानते हुए कि एक ऐसा समय आएगा जब सच्चे जिज्ञासु, जिनके मन मस्तिष्क, बाबाजी के सत्य को अपनाने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार होंगे, इस महान सत्ता के बारे में जानने के लिए प्यासे हो उठेंगे; परमहंस योगानंद ने उनकी पहचान को लेकर बहुत से संकेत दिए जिनका आगे चलकर प्रकटीकरण तय था। कदाचित इस बात का सबसे बड़ा संकेत उन्होंने अपनी आत्मकथा में दिया है जहाँ उन्होंने हमें बताया कि बाबाजी तो उन महावतार के बहुत से नामों में से एक नाम है और यह कि उन्हें बहुत से दूसरे नामों से भी बुलाया जाता है जो शैव मत से संबंधित हैं। बाबाजी के बारे में वे कहते हैं:

"उन्होंने अपने लिए एक साधारण नाम चुना है (जिसका अर्थ पूज्य पिता होता है); लाहिड़ी महाशय के शिष्यों द्वारा उन्हें दिए गए दूसरे नाम हैं, महामुनि बाबाजी महाराज, महायोगी, त्र्यम्बक बाबा और शिव बाबा।"

यह योगानंद की कलम की कोई गलती नहीं बल्कि स्पष्ट संकेत है कि वे किसे बाबाजी कह रहे हैं। इन नामों से कोई साधारण पाठक भी आसानी से यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि योगावतार लाहिड़ी

महाशय और उनके शिष्य, बाबाजी को एक अवतार और शिव का स्वरुप मानते थे। शिव के इस स्वरुप की किसी सामान्य अवतार के रूप में व्याख्या नहीं हुई बल्कि अति उच्च और शिव की अनश्वर अभिव्यक्ति के रूप में उन्हें जाना गया है, क्योंकि बाबाजी स्वयं अविनाशी शिव ही हैं, जो पूरे भारतवर्ष में शिवगोरक्ष के नाम से प्रसिद्ध हैं, हर युग में होने वाले संत और नाथ सम्प्रदाय के प्रतिष्ठापक हैं। गुप्त रूप से और हिमालय के योगियों के लिए वे शिवगोरक्ष बाबाजी के नाम से जाने जाते हैं। आम आदमी के लिए वे गोरक्षनाथ या गोरखनाथ हैं।

जब हम योगानंद के जीवन के विवरणों की ओर ध्यान देते हैं तब बाबाजी के ही गोरक्षनाथ होने की पुनः पुष्टि हो जाती है। 'मेजदा' नामक पुस्तक में, जो परमहंस योगानंद के छोटे भाई, गोरा द्वारा लिखित है और जिनका स्वयं का नाम संत गोरक्षनाथ के नाम पर रखा गया था, हमें योगानंद के शैशवकाल की घटनाओं का विवरण मिलता है।

मेजदा या योगानंद का जन्म गोरखपुर में हुआ था। उनके जैसे एक अत्यंत उच्च कोटि के संत का इस नगर में जन्म लेना कोई संयोग की बात नहीं थी। इसमें मैं उनका गोरक्षनाथ के साथ गहरा संबंध देखता हूँ जिन्हें आगे चलकर उन्होंने अपनी प्रसिद्ध आत्मकथा में बाबाजी कहा है। गोरखपुर गोरक्षनाथ के भक्तों के लिए एक अत्यंत पावन तीर्थ है क्योंकि मध्ययुग में शिवगोरक्ष बाबाजी की उपस्थिति से यह स्थान पवित्र हुआ था। यह मंदिर, भारत में उनका एक प्रमुख मंदिर है, जहाँ से साधकों को दिव्य विधि विधान, लक्ष्य और आशीर्वाद प्रदान किये जाते हैं। यही वह स्थान था जहाँ योगानंद ने जन्म लिया और बाबाजी के प्रति अपने सच्चे प्रेम और श्रद्धा के कारण उन्होंने गोरक्षनाथ के इस पवित्रतम मंदिर के स्थान की तरफ़ चुम्बकीय खिंचाव महसूस किया।

योगानंद के माता पिता गोरक्षनाथ के बहुत बड़े भक्त थे और उनके मार्गदर्शन एवं आशीष के लिए नियमित रूप से उनके मंदिर जाया करते थे। मात्र चार वर्ष की आयु में योगानंद ने शिवगोरक्ष बाबाजी की शक्ति और कृपा का अनुभव किया और वे इस पवित्र मंदिर में सर्वव्यापी चेतना के आनंद में लीन हो गए थे। उनका यह अनुभव, मेजदा (बांग्ला भाषा में बड़े मंझले भाई का नाम) पुस्तक में, कुछ इस तरह दिया गया हैः

"साधारणतया, हमारे माता पिता, मेजदा को हर रविवार या पवित्र दिनों में पूजा के लिए गोरखनाथ के मंदिर ले जाया करते थे। हालाँकि, एक रविवार हमारे घर में धार्मिक उत्सव होने के कारण वे मंदिर नहीं जा सके।

"जैसे-जैसे मेहमान घर से जाने लगे, माँ को इस बात का भान हुआ कि उन्होंने मेजदा को कई घंटों से देखा नहीं। घर और पड़ोस में खोजबीन की गई पर उनका कोई पता नहीं चला। अपने पुत्र के स्वभाव को जानते हुए और अंततः इस बात को समझ कर माँ ने पिताजी से कहा, 'क्योंकि हम गोरखनाथ के मंदिर में हर रविवार पूजा करने जाते हैं और इस रविवार हम नहीं गए, तो हो सकता है कि मुकुंद (योगानंद के जन्म का नाम) वहीं हो।'

"पिताजी और कुछ मेहमान सीधे मंदिर की ओर चले गए। जैसा माँ का अनुमान था, मेजदा वही थे, वे किसी छोटे साधू की तरह, ध्यान में लीन बैठे हुए थे। जबकि सारा परिवार उत्सव का आनंद ले रहा था, वे चुपचाप घर से बाहर निकलकर मंदिर में अपनी प्रत्येक रविवार की उपस्थिति दर्ज कराने चले गए – मंदिर एक किलोमीटर से ज़्यादा दूरी पर था जो एक छोटे बच्चे के लिए लम्बी दूरी थी।

"....भोर होने को थी.... मेजदा ने काफ़ी देर बाद अपनी आँखें खोलीं और अपने चारों तरफ़ इकठ्ठा हुए इतने लोगों को देख कर बड़े चकित हुए। तब उन्हें इस बात का भान हुआ कि वे कहाँ थे और क्यों सब उनके विषय में इतने चिंतित हो उठे थे। एक मीठी मुस्कान के साथ उन्होंने अपने पिता की ओर देखा और फिर उन्हें यूँ परेशान होता देख, सिर झुका कर प्रणाम किया। पिताजी ने गंभीर आवाज़ में उनसे कहाः 'अब घर चलो। बहुत देर हो गई है। हम लोग तुम्हारे बारे में बहुत चिंतित थे।'"

गोरक्षनाथ, जिन्होंने योगानंद को इस छोटी सी उम्र में आशीर्वाद दिया था, आगे चलकर उन्होंने ही पश्चिम में क्रियायोग के प्रचार, प्रसार के लिए उन्हें मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्रदान किया। और वे गोरक्षनाथ ही थे जो कालांतर में परमहंस योगानंद की आत्मकथा में महान महावतार बाबाजी के नाम से प्रसिद्ध हुए।

अध्याय ३

संत जो बाबाजी नहीं हैं

संसार भर के सच्चे जिज्ञासुओं के साथ मिलकर मुझे यह बात स्पष्ट हुई कि बाबाजी को लेकर बहुत अधिक संदेह और भ्रम की स्थिति बनी हुई है। जैसा पहले भी बताया जा चुका है कि बाबाजी शब्द का सामान्य अर्थ 'पूज्य पिता' होता है एवं भारत में बड़े बुजुर्गों को इस नाम से ही सम्बोधित किया जाता है। अतः, सभी संशयों को स्पष्ट करने और इस उलझन से मुक्ति पाने के लिए, मुझे इस बात को समझाने की आवश्यकता महसूस हुई कि कौन सच्चे शिवगोरक्ष बाबाजी नहीं हैं, या कौन शिवगोरक्ष बाबाजी नहीं हो सकते।

बाबाजी हैड़ाखन – प्रथम

ये बाबाजी १८६१ में प्रकट हुए और कुमाऊँ की पहाड़ियों के बीच, हैड़ाखन नामक स्थान में अपनी लीला की। वे हैड़ाखन बाबा के नाम से प्रसिद्ध हुए। बहुत से लोग यह कहते हैं कि वे द्रोणाचार्य[१] के पुत्र अश्वत्थामा[२] थे।

महाभारत के महान युद्ध के पश्चात वे चिरंजीवी हो गए और अविनाशी हो कर वे आज भी अपने सूक्ष्म या स्थूल शरीर में जीवित हैं।

---

१ देवऋषि, जो महाभारत के काल में जीवित थे, कौरव और पांडवों के गुरु, और अश्वत्थामा के पिता।

२ अष्ट चिरंजीवियों में से एक; लगभग ३१०२ ई.पू., महाभारत के महान युद्ध में उन्होंने भाग लिया था और ऐसा कहा जाता है कि वे आज भी हिमालय में जीवित हैं।

कुछ साधक उन्हें शिव का अंश-अवतार भी मानते हैं। १९२४ में, वे हिमालय में कहीं गुम हो गए और ऐसा माना जाता है कि वे गुप्त रूप से अश्वत्थामा के रूप में वहां विचरण कर रहे हैं। ये वे महावतार शिवगोरक्ष बाबाजी नहीं हैं जिनका मैं सन्दर्भ दे रहा हूँ और जो शिव की पूर्ण अभिव्यक्ति हैं। और ना ही ये वो बाबाजी हैं जिनका उल्लेख योगानंद की आत्मकथा में मिलता है। स्वामी राम ने हैड़ाखन बाबा की आध्यात्मिक प्रतिष्ठा को सोमबारी बाबा और स्वयं के गुरु, बंगाली बाबा के समकक्ष बताया है, अतः इससे यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है कि वे शिवगोरक्ष बाबाजी नहीं हैं, जो अनुपादक हैं – अजर-अमर हैं और अनंत शिव की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हैं।

बाबाजी हैड़ाखन – द्वितीय

हैड़ाखन बाबा-प्रथम के अंतर्धान होने के कुछ वर्षों पश्चात एक युवा बालक नेपाल से कुमाऊँ प्रदेश में हैड़ाखन बाबा के आश्रम आया और इस बात का दावा करने लगा कि वह इस नए, जवान शरीर में हैड़ाखन बाबा ही है और वह भी अब इसी नाम से जाना जायेगा। दोनों बाबा ने अपना नाम उसी स्थान का रखा (हैड़ाखन) जहाँ वे रह रहे थे जैसा कि सामान्यतः भारत में किया जाता है।

हैड़ाखन बाबा-प्रथम के अदृश्य हो जाने के पीछे कुछ अस्पष्टता बनी हुई है। कुछ लोग कहते हैं कि उन्होंने दूरस्थ हिमालय की श्रेणियों में महासमाधि ले ली (योग क्रिया के द्वारा स्वेच्छा से अपने शरीर से प्राण निकाल लेना), जबकि कुछ दूसरे यह कहते हैं उन्होंने अपना शरीर रुपी चोला बदल लिया था और एक नया शरीर ग्रहण किया जो इस जवान नेपाली बालक का शरीर था। इस युवा सिद्ध ने अपने जीवनलक्ष्य के दौरान कई चमत्कार किए। उसे सच्चे, अनश्वर बाबाजी के रूप में अत्यंत श्रद्धा और सम्मान मिला परन्तु वर्ष १९८४ में उसकी मृत्यु हो गयी। वह एक अंश अवतार या बाबाजी का ही एक रूप हो सकता था, लेकिन इस बात पर संशय की छाया आ गई जब वह परलोक सिधार गया। हैड़ाखन बाबा के लौकिक रूप से अस्तित्ववान होने के ऐतिहासिक साक्ष्य मौजूद हैं परन्तु उनकी मानवीय मृत्यु हुई, अतः यह स्पष्ट है कि वे अनश्वर महावतार बाबाजी नहीं हैं।

गोरख नारायण

गोरख बाबा के नाम से भी प्रचलित ये संत, हिमालय के कुमाऊँ प्रदेश में रहते हैं। 'श्री बाबाजी' नामक पुस्तक से विख्यात हो जाने पर कभी-कभी उन्हें 'श्री बाबाजी' भी बुलाया जाता रहा है। श्री बाबाजी पुस्तक में यह लिखा है कि गोरख नारायण का एक नाम शिवगोरक्ष बाबाजी भी है। यह योगी, गोरख नारायण, हो सकता है कि शिवगोरक्ष बाबाजी के नाम से जाने जाते हों, लेकिन यहाँ मैं आपको यह बिलकुल स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि ये वो प्रसिद्ध शिवगोरक्ष बाबाजी नहीं हैं जिनका सन्दर्भ मैं इस पुस्तक में दे रहा हूँ। और न ही वे योगानंद की आत्मकथा वाले बाबाजी ही हैं। गोरख नारायण ने यह बताया है कि वे अपने पूर्वजीवन में कृपाचार्य थे जो महाभारत युद्ध के काल में जीवित थे। शिवगोरक्ष बाबाजी जिनका मैं यहाँ उल्लेख कर रहा हूँ, स्वयं भगवान शिव की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हैं। महाभारत युद्ध के दौरान, दिव्य महावतार बाबाजी ने कुंती के छह दिव्य पुत्रों के जन्म का आशीर्वाद दिया था। वे किसी युद्ध के बखेड़े में फँसने से कोसों दूर थे। इसके विपरीत, वे महाभारत युद्ध के मौन दर्शक एवं दिव्य साक्षी थे। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ये वे कृपाचार्य नहीं थे जिन्होंने पांडव और कौरव वंश के बीच हुए महाभारत युद्ध में भाग लिया था।

गोरख नारायण, हिमालय के अन्य योगियों की तरह, एक आश्रम में रहते हैं, जहाँ तीर्थयात्री एवं पथिक उनसे आसानी से मिल कर उनका आशीर्वाद ले सकते हैं। जिन बाबाजी के बारे में मैं बात कर रहा हूँ, शिवगोरक्ष बाबाजी, एक दिव्य सत्ता हैं, जिनसे मिलना तभी संभव है जब कि स्वयं वे ऐसा चाहें। यहाँ तक कि अपने लौकिक रूप में भी, जब, जहाँ जैसी आवश्यकता पड़ती है वे अभिव्यक्त हो जाते हैं, लेकिन सदा ही केवल मार्गदर्शन या जगत के क्रमोत्थान को प्रोत्साहित करने के लिए ही अथवा बेहद दुर्लभ परिस्थितियों में विशिष्ट व्यक्तियों को दर्शन देते हैं। यह मिलन अत्यंत व्यक्तिगत, अत्यधिक शक्तिशाली और अभूतपूर्व रहस्य से भरा होता है।

बाबाजी नागराज

हम, दक्षिण भारत के कोई संत बाबाजी नागराज के ऐतिहासिक अस्तित्व को पहचान देने के लिए पूरी निष्ठा से कोशिश कर रहे हैं। हमने तमिलनाडु के तंजावुर नगर में सर्फ़ोजी सरस्वती महल पुस्तकालय में उनके नाम की खोजबीन की। ऐसा कहा जाता है कि इस संत ने वहां जन्म लिया था। तमिलनाडु के विभिन्न भागों में जांच पड़ताल और शोध किये गए, जिनमें सित्तरगिरी भी शामिल है। परन्तु अब तक हमें बाबाजी नागराज के अस्तित्व से सम्बंधित ऐतिहासिक साक्ष्य मिलना शेष है, केवल एक आधुनिक मंदिर को छोड़कर जो उनके नाम पर स्थापित और आधारित है। परन्तु यह मंदिर एक ऐसे आदमी की निजी ज़मीन पर बना हुआ था जिसने बाबाजी नागराज और क्रियायोग पर उनकी पुस्तक के विषय में लिखा था।

यह कुछ अजीब सी बात लगती है कि बाबाजी नागराज को वास्तविक बाबाजी का नाम, परमहंस योगानंद की महासमाधि के बाद दिया गया एवं तब नहीं जब कि वे जीवित थे। यदि ऐसा किया जाता तो यह अच्छा होता क्योंकि तब योगानंद इस दावे का समर्थन करते और इसे आशीर्वाद देते कि उनकी आत्मकथा के बाबाजी और दक्षिण भारतीय बाबाजी एक ही व्यक्ति हैं। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। इससे अधिक और क्या कहा जाए कि तमिलनाडु के वासियों को भी बाबाजी नागराज के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं है जबकि वे दूसरे तमिल सिद्धों जैसे थिरुमूलार, बोगार नाथ, सम्बन्धार, करूर सिद्ध और रामलिंग स्वामी के विषय में बहुत कुछ जानते हैं। बाबाजी नागराज का क्रियायोग भी वास्तविक क्रियायोग से मेल नहीं खाता है। हालांकि सभी योग – चाहे वे पुरातन हों या नव अविष्कृत हों, अच्छे ही होते हैं। मैं यहाँ सिर्फ इसलिए अंतर कर रहा हूँ ताकि लोग उसी योग का अभ्यास करें जिसका अभ्यास करने का उनका इरादा हो, न कि किसी और योग का अभ्यास। जहाँ तक बाबाजी नागराज के ऐतिहासिक अस्तित्व के साक्ष्य मिलने का प्रश्न है, हमें अब तक तमिल सिद्धों के परिपेक्ष्य में इस नाम के किसी भी संत का कोई भी सन्दर्भ या सबूत नहीं मिला है।

सित्तरगिरी नगर के एक मंदिर में अठारह सिद्धों की मूर्तियां।
सभी सिद्धों के प्रमुख के रूप में शिव गोरक्ष बाबाजी,
बीच में स्थित हैं और उनकी मूर्ति के नीचे फूल रखे गए हैं।

बाबाजी नागराज की खोज में हम एक छोटे नगर सित्तरगिरी पहुंचे, इस नगर का नाम अठारह दक्षिण भारतीय सित्तरों या सिद्धों की परंपरा की विरासत पर बिलकुल ठीक रखा गया था। हमने वहां अठारह तमिल सित्तरों की मूर्तियां देखीं परन्तु बाबाजी नागराज का नाम कहीं भी उल्लेखित नहीं पाया। हालांकि उन अठारह मूर्तियों के ठीक बीच में एक मूर्ति के चरणों के पास हमने फूल गिरे देखे, जो उसे उनका प्रमुख या उनका गुरु होना बता रहा था। जैसा कि हमें मंदिर के महंत ने बताया कि यह मूर्ति शिवगोरक्ष बाबाजी की थी, जो हिमालय से ऋषि अगस्त्य और सुन्दर नाथ के साथ, उत्तर भारत से योग के ज्ञान को दक्षिण तक ले कर आए।

नेपाल में एक कथा है जिसके अनुसार शिवगोरक्ष बाबाजी ने एक बार स्वयं को नागाओं के आध्यात्मिक राजा के रूप में प्रकट किया। किसी पुराने अवशेष में वे समाधि की मुद्रा में दर्शाये गए हैं, जिसमें वे नौ नागों से बने योग के सिंहासन पर विराजमान हैं। अतः भारत के

कुछ प्रदेशों और नेपाल में शिवगोरक्ष बाबाजी को "नागराज" के नाम से भी जाना जाता है। अतः सित्तरगिरी के अठारह सित्तरों के मंदिर को देखकर इस बात की पूरी संभावना लगती है कि शिवगोरक्ष बाबाजी के नागराज नाम की प्रसिद्धि दक्षिण भारत तक भी अवश्य पहुंची होगी। अतः नागराज तो शिवगोरक्ष बाबाजी की महज़ एक उपाधि है।

इसके अलावा, दूसरी शताब्दी में नागार्जुन नामक एक दिव्य रसायनविद का उल्लेख मिलता है जो शिवगोरक्ष बाबाजी का शिष्य था और वह भी उत्तर भारत से आया था। यह हो सकता है कि नागार्जुन की प्रसिद्धि दक्षिण भारत तक पहुंची हो और उसे ही कालांतर में नागराज कहा गया हो।

यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि यदि किसी बाबाजी नागराज नाम के मनुष्य ने तमिलनाडु में पैदा हो कर वहां जीवनयापन किया भी हो, तब भी उसका जन्म एक मानवीय जन्म माना जाएगा, और इसीलिए वह अनश्वर महावतार बाबाजी नहीं हो सकता जिनका उल्लेख, 'एक योगी की आत्मकथा' पुस्तक में आता है और जिनके विषय में, मैं यहाँ बतला रहा हूँ।

योगाचार्य श्री गुरू गोरक्षनाथ जी

नागों के सिंहासन पर विराजमान सच्चे शिव गोरक्ष बाबाजी